अन्धा इंसाफ़

(बच्चों के लिए कहानियाँ)

मतीन तारिक़ बाग़पती

अनुवादक
कौसर लईक़

(अल्लाह के नाम से जो रहमान और रहीम है।)

अन्धा इन्साफ़

बहुत दिनों की बात है। एक हरे-भरे जंगल में एक खूबसूरत हंस और हंसिनी का जोड़ा रहता था। वे बड़े ख़ुश और बड़े ही मगन थे। जंगल का हर जानवर उनसे प्यार करता था और उनकी हर बात मानता था। वे भी सबके साथ मिलजुल कर रहते और चैन की बंसी बजाते थे।

एक दिन हंसिनी ने हंस से कहा कि हमें बहुत दिन इस जंगल में रहते हो गये हैं। इससे आगे की दुनिया का हमें पता ही नहीं है कि वहां क्या है? सुना है कि दुनिया बहुत बड़ी और लम्बी-चौड़ी है। इसमें बड़ी-बड़ी ख़ूबसूरत चीज़ें हैं; बड़ी अच्छी-अच्छी बस्तियां हैं; बड़े मनोहर दृश्य और नज़ारे हैं; आख़िर वहां भी तो चलकर सैर करनी चाहिए। हंस ने हंसिनी की यह बात सुनी तो उसे समझाया और कहा– "घर से निकलने में सौ तरह के ख़तरे हैं; कभी खाना नहीं मिलता, तो कभी आराम नसीब नहीं होता, तो कभी दुश्मन पीछे लग जाते हैं और कहीं जान के लाले पड़ जाते हैं। मतलब यह कि एक अच्छी ख़ासी मुसीबत है। तुम यहीं रहो, यहां घर में इज़्ज़त और आराम से हो।" मगर हंसिनी ने सुनी-अनसुनी कर दी। वह बराबर ज़िद करती रही। आख़िर हंस को उसकी बात माननी ही पड़ी।

दोनों तैयार होकर घर से निकले। एक लम्बी उड़ान ली और जंगल, पहाड़ों और नदियों को पार करते हुए बहुत दूर निकल गये। वे उड़े जा रहे थे कि रास्ते में उन्होंने एक उजड़ी हुई बस्ती देखी, ऐसी

उजड़ी बस्ती कि जहाँ न कोई आदमी था, न आदमी का बच्चा और न कोई जानवर था और न कोई जानदार। बस गिरे-पड़े मकान, वीरान और टूटे-फूटे घर और बेरौनक़ खण्डहर थे, जिन्हें देखने से भी डर लगता था। यह दृश्य देखकर हंसिनी को बड़ा डर लगा। उसने डरते-डरते हंस से पूछा—"प्यारे हंस! यह बस्ती उजाड़ क्यों हो गई? यहां के रहने वाले आख़िर कहां चले गये? और यहां की चहल-पहल को क्या हुआ?"

हंस ने उत्तर दिया— "क्या तुम्हें पता नहीं कि यह उल्लू के बैठने का स्थान है। मैंने बड़े-बूढ़ों से सुना है कि जहां उल्लू बैठ जाता है, वह जगह उजाड़ हो जाती है, बस्ती तबाह हो जाती है और चारों तरफ़ वीरानी और वहशत बरसने लगती है। चलो, यहां से जल्दी निकल चलो।"

कहीं छुपा हुआ उल्लू भी ये बातें सुन रहा था। उसे बड़ा गुस्सा आया। वह उड़कर उनके पास पहुंचा और हंस को डांटते हुए रोबदार आवाज़ में बोला— "अरे ओ! हंस के बच्चे! कहां जाता है, यह हंसिनी मेरी है मुझे दे।" हंस बेचारा परदेशी था। पहले तो बहुत डरा, मगर फिर हिम्मत करके बोला—

"ख़ुदा से डरो, हंसिनी का और तुम्हारा क्या मेल। यह हंसिनी है, तुम उल्लू हो। कहीं आज तक किसी ने उल्लू के साथ किसी हंसिनी को देखा भी है।"

उल्लू ने फिर दहाड़ते हुए कहा— "हम इस बात को नहीं जानते, हंसिनी हमारी है। तुम इसको यहीं छोड़कर अपनी राह लो।"

हंस बहुत परेशान हुआ। उसने उल्लू की बहुत मिन्नत व ख़ुशामद की, मगर वह भी अपने नाम का उल्लू था। ज़रा भी

टस-से-मस न हुआ। शोरगुल सुनकर बहुत-से पक्षी इकट्ठे हो गये, मगर सब उल्लू से डरते थे। बहुत देर तक बात चलती रही। अन्ततः बहुत देर के बाद इस बात पर फ़ैसला हुआ कि यहां से पास ही गांव है। वहां चलो और पंचायत में फ़ैसला करा लो। उल्लू तैयार हो गया। उसे पूरा विश्वास था कि जीत उसी की होगी।

अतः सब मिलकर गांव पहुंचे और पंचों के सामने मामला रखा। हंस की बदक़िस्मती से पंच भी बड़े ही नीच और बेईमान थे। उन्हें न तो अल्लाह का पता था और न उसके क़ानून का, न अपनी ज़िम्मेदारियों का सही-सही ज्ञान था और न परलोक (आख़िरत) की पूछताछ का। वे रिश्वत लेते थे, मनमानी करते और ख़ूब मज़े उड़ाते थे।

दोनों की बातें सुनकर पंचों ने सोचा, हंस एक परदेशी जानवर है। परदेशी के साथ क्या हमदर्दी। उल्लू अपने ही देश का है, इसके साथ फिर वास्ता पड़ेगा। हम आज इसी की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाएंगे, तो कल यह हमारी-सी कहेगा। इंसाफ़ को कौन देखता है? इंसाफ़ तो ताक़त के साथ है, सदा से यही होता चला आ रहा है, 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। हम क्या इसे बदल सकते हैं? अतः फ़ैसला उल्लू के पक्ष में हुआ और हंसिनी उल्लू को मिल गई।

उल्लू हंसिनी को लेकर ख़ूब उछला-कूदा और बहुत ख़ुश हुआ। मगर हंस बेचारा पंचों के न्याय को देखकर सिर पकड़कर बैठ गया। जैसे कि उसकी कमर टूट गई हो। इस प्रकार बहुत देर तक रोता रहा। बड़ी देर बाद उसने सिर उठाया और उड़ने के लिए पंख फैलाया कि फिर उल्लू राजा की आवाज़ सुनाई दी। वह कह रहा था—"भइया हंस ज़रा ठहरना।" फिर वह उड़कर उसके पास आया और बोला—"तुमने बीसवीं सदी के पंचों का इन्साफ़ देख लिया। उन्होंने

जानते-बूझते हंसिनी मुझे दिला दी, मगर मैं ऐसा अन्यायी और ज़ालिम नहीं हूँ कि हंसिनी को रख लूं। तुम्हारी हंसिनी तुम्हें मुबारक हो। यह तो मैंने तुम्हें सिर्फ़ तमाशा दिखाया था। तुमने यहां पहुँचते ही मेरे ऊपर आरोप लगाया था कि जहां उल्लू बैठ जाता है, वहां उजाड़ हो जाता है। भइया! उजाड़ मेरे बैठने से नहीं, बल्कि जब आदमी अन्याय और ना-इन्साफ़ी पर उतर आते हैं, अपने पैदा करने वाले मालिक व पालनहार को भूलकर मनमानी काम करने लगते हैं, भलाई और शुद्धता को छोड़कर ज़ुल्म और अत्याचार को अपनी आदत बना लेते हैं,तो अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब आ जाता है और ज़ालिम बस्ती को उलट दिया जाता है। अतः यह बस्ती भी ऐसे ही ज़ालिमों की बस्ती थी, जिसे अल्लाह ने उलट -पलट कर दिया, जो इस उजाड़ की दशा में है। जाओ अल्लाह की मेहरबानी हो गयी है, वरना तुम भी उलट-फेर में आ गये थे।"

हंस और हंसिनी इतना सुनकर उड़ गये।

शेर और आदमी

जंगल के आख़िरी सिरे पर एक बूढ़ा शेर रहता था। वह बहुत नेक और अच्छा था। सब जानवर उसको अपना राजा मानते थे और सुख-चैन से रहते थे।

उसके एक बच्चा था। वह बड़ा ख़ूबसूरत और बड़ा होशियार था। जब बूढ़ा शेर मरने लगा, तो अपने बच्चे से कहा कि शेरू! अब मैं मरने के क़रीब हूँ, यह अल्लाह का क़ानून है कि जो चीज़ भी पैदा हुई है, उसे मिटना है। मैं भी मर जाऊंगा। मेरे मरने के बाद तुम्हें मेरी जगह लेनी है। वैसे तो मैंने तुम्हें सब कुछ सिखा दिया है, मगर आख़िर में एक नसीहत और करता हूँ--

"देखो जिस संसार में हम तुम रहते हैं, यह बहुत विशाल है। अल्लाह ने इसमें एक-से-एक अच्छी चीज़ें पैदा की हैं। नदी, पहाड़, जानवर, आदमी आदि। इन तमाम चीज़ों में आदमी सबसे ज़ालिम चीज़ है। तुम उससे बचते रहना.....।"

शेर यह कहते-कहते ही मर गया, उससे आगे कुछ न कह सका। शेर के बच्चे के दिल में यह अरमान रह ही गया कि आदमी के बारे में कुछ और पूछता, मगर अब क्या होता?

इन बातों को हुए बहुत दिन बीत गये। शेर का बच्चा जवान हो गया, बिल्कुल अपने पिता की तरह। जंगल के सभी जानवर उससे भय खाने लगे और उसका कहा मानने लगे। वह भी अकड़ता हुआ

चलता था और मज़े से राज करता था। लेकिन फिर भी उसे अपने बाप की आख़िरी बात याद थी कि 'इंसान से बचते रहना।' मगर वह आदमी को फिर भी देखना चाहता था कि आख़िर वह क्या बला है, जिससे मेरा बाप जंगल का राजा होते हुए भी डरता और कांपता था।

इसी शौक़ में एक दिन वह जंगल से निकला और आदमी की खोज में चला। बहुत देर तक इधर-उधर मारा-मारा फिरने के बाद उसे एक हरा-भरा मैदान दिखाई दिया, जिसमें एक घोड़ा घास चर रहा था। चालाक, तेज़-तर्रार, छलांगें लगाता हुआ, कूदता, फांदता मगन घूम रहा था।

उसकी फुर्ती, चालाकी और तेज़ी को देखकर शेर के बच्चे ने दिल में सोचा, शायद यही 'आदमी' है। वह डरते-डरते उसके पास गया। अदब से खड़ा हुआ और पूछा, "क्या आप आदमी हैं?"

घोड़ा अपने सामने शेर को देखकर भौंचक्का रह गया। उसके मुंह से हरा-भरा घास का गुच्छा छूटकर ज़मीन पर गिर गया। लेकिन उसकी बात को सुनकर घोड़े की ढांढ़स बंधी और उसने साहस करके जवाब दिया, "ऐ जंगल के राजा! मैं तो घोड़ा हूँ, आदमी नहीं। भला मेरी क्या मजाल है कि उसके सामने ठहर सकूँ। दिन-दिन भर तांगों और गाड़ियों को खींचना, लगाम के इशारे पर चलना, आगे-आगे भागना, चैन न आराम, कोई-न-कोई कमर पर सवार, ऊपर से तड़ातड़ कोड़ों की मार। बस यही मेरी ज़िन्दगी है। जो मुझ पर गुज़रती है, वह मैं ही जानता हूँ।"

घोड़े की ये बातें सुनकर शेर का बच्चा बहुत डरा। लेकिन फिर भी यह सोचकर कि आदमी को देखना अवश्य चाहिए। वह आगे बढ़ा। सामने से एक ऊंट आता दिखाई दिया। घोड़े से भी चार हाथ ऊंचा, लम्बी-लम्बी टांगें, बे-डौल गरदन उठाए, ऊंचे-ऊंचे पेड़ों के

पत्तों का सफ़ाया कर रहा था। शेर के बच्चे ने सोचा यही आदमी हो सकता है। लेकिन पूछने पर उसे भी आदमी से पनाह मांगते हुए पाया। उसने कहा, "मेरी ऊंचाई पर मत जाओ, आदमी के हाथों हमारी तो मिट्टी ख़राब है। हम से सवारी का काम लेता है, बोझ ढुलवाता, सारे दिन दौड़ाए-दौड़ाए फिरता है। एक ज़रा-सी नकेल से तगनी का नाच नचाता है। हम हज़ार चीख़ते-चिल्लाते और बिलबिलाते हैं, मगर कोई हमारी फ़रियाद नहीं सुनता। आख़िर हार-झक मारकर चुपचाप कान दबाए एक छोटे-से बच्चे तक के पीछे रास्ता चलते रहते हैं। अल्लाह जाने इस मुसीबत से कब निजात मिलेगी और उस आदमी के बच्चे से कब छुटकारा हासिल होगा।"

शेर ऊंट की बात सुनकर और भी ज़्यादा डरा। लेकिन फिर भी हिम्मत करके आगे बढ़ा। चलते-चलते रास्ते में उसे एक हाथी दिखाई दिया, जो एक बड़े मकान की तरह खड़ा था। उसे देखा बड़ा डील-डौल, डरावने दांत, पैर मोटे खम्भे की तरह, कान अच्छे ख़ासे जैसे सूप और फिर सबसे अजीब चीज़ मुँह पर सूड़, अल्लाह पनाह में रखे। उसे विश्वास हो गया कि हो-न-हो यही आदमी है। उसका जिस्म ऊंट से बड़ा और घोड़े से कई गुना था। वह बहुत ही डरते-डरते उसके सामने गया। पहले अदब से 'सलाम' किया और फिर पूछा, "क्या आप ही आदमी हैं?"

हाथी ने यह सुनकर शेर के बच्चे को ऊपर से नीचे तक देखा। वह उसकी नादानी पर हँसा और फिर नर्मी से कहा कि यह किस बला का नाम तुम ले रहे हो, उससे तो अल्लाह बचाए। बड़ी ज़ालिम चीज़ है। मुझे देखो मैं कैसे डील-डौल का हूँ। हर चीज़ नाक, कान, सूंड़ और शक्ति अल्लाह ने मुझे दी है। मगर आदमी ऐसी आफ़त का परकाला है कि उसके हाथों मेरी नाक में दम है। घोड़े के मुंह में लगाम

लगा देता है, ऊंट की नाक में नकेल तो डाल देता है, मगर मेरे तो लगाम न नकेल, बस वैसे ही रेलपेल जब देखो तो गरदन पर सवार, हाथ में अंकुश। ज़रा भी 'चूँ' की कि शामत आई। मतलब यह कि कहां तक बताऊँ, सारी रुस्तमी खाक़ में मिली हुई है। 'उफ़' तक नहीं कर सकता। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम भी अपने बूढ़े बाप की नसीहत पर अमल करो और आदमी के देखने के ख़्याल को दिल से निकाल दो, वरना सारी शेख़ी निकल जाएगी।

इतने बड़े हाथी की बात सुनकर तो उसके होश उड़ गये। वह वहीं से घर लौट पड़ा। लेकिन ख़ुदा का करना कि उस जंगल में एक बढ़ई लकड़ी चीर रहा था। एक बड़े लट्ठे में खूंटी लगी हुई थी और आरी चल रही थी। शेर वहां पहुंचा तो उसने वैसे ही उससे पूछ लिया, "क्या तुम आदमी हो?" बढ़ई शेर को देखकर बहुत डरा। लेकिन हिम्मत करके उसने कहा कि आपको क्या काम है। शेर ने जवाब दिया कि मैंने कभी आदमी को नहीं देखा, मैं आदमी को देखना चाहता हूँ। बढ़ई ने सादगी में आकर कहा, "जी, हाँ मैं आदमी हूँ।"

इतना सुनकर शेर बहुत ज़ोर से हँसा और फिर नफ़रत से कहा, "अरे! क्या तू ही आदमी है, जिससे जंगल का बड़े-से-बड़ा जानवर डरता, भय खाता और कंपकपाता है, ले आज मैं तेरा अंत किये देता हूँ।"

इतना कहकर शेर आगे बढ़ा, ताकि बढ़ई का काम तमाम करे, लेकिन बढ़ई ने उस संकट काल में तरकीब से काम लिया और शेर से कहा, "ऐ जंगल के राजा सचमुच आप बड़े बहादुर हैं। आपके सामने मेरी क्या हैसियत है। मगर थोड़ा रुकिये, इस वक्त मेरा एक काम अटका हुआ है। अपनी कमज़ोरी के कारण मैं उसे पूरा नहीं कर सका था। अब अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से आप जैसा बहादुर भेज

दिया। क्या इस काम में मेरी थोड़ी-सी मदद कर सकते हैं? फिर मेरे साथ जो चाहे कर लीजिएगा और वह काम यह है कि इस लकड़ी के लट्ठे में से यह खूंटी सरकाना चाहता हूँ, ज़रा आप अपने हाथ सूराख़ में डालकर थाम लीजिए, मैं खूंटी खींच लूंगा।

शेर यह खुशामद भरी बातें सुनकर फूला न समाया और उसने अपनी नादानी से सूराख में अपने हाथ डाल दिये। बढ़ई ने झट खूंटी खींच ली। खूंटी के निकलते ही लकड़ी के तख़्ते आपस में मिल गये और शेरू मियां के दोनों हाथ उसमें फंसे रह गये। अब क्या था, मारे तकलीफ़ के उसका बुरा हाल था।

बहन हिरनी

कहते हैं कि बड़ा हरा-भरा एक जंगल था। दूर-दूर तक उसमें छायेदार पेड़ खड़े थे। बहुत-से जानवर वहां रहते थे और रात को आकर आराम करते थे। उन जानवरों में एक हिरनी भी रहती थी। वह बड़ी भली, बड़ी ख़ूबसूरत और बड़ी भोली-भाली थी। सब जानवर उसको चाहते थे और प्यार में उसे 'बहन हिरनी' कहते थे।

उस जंगल में एक भेड़िया भी रहता था। वह बड़ा ख़राब, बदसूरत और ज़ालिम था। वह हिरनी की सूरत से जलता था और मौक़े की तलाश में था कि कब कोई वक़्त आए और मैं उसका सफ़ाया कर दूँ, लेकिन उसे जंगल के जानवरों से डर लगता था, क्योंकि वे सब हिरनी को प्यार करते थे।

हिरनी के दो बच्चे थे। एक का नाम ईवना था और दूसरे का नाम बीना। बहन हिरनी जब भी बाहर जाती, तो बच्चे वहां अकेले रहते थे। वे दिन भर खेलने-चुगने में लगे रहते थे।

भेड़िया यह सब देखता और जी में कुढ़ता था। आख़िर उससे न रहा गया। एक दिन जब बहन हिरनी घास-फूस की तलाश में बाहर गई हुई थी, तो वह वहां आया और बच्चों को चटकर गया।

शाम को जब बहन हिरनी वापस आई, तो उसे बच्चे दिखाई न दिये। उसे बहुत रंज हुआ। जंगल के जिस जानवर ने सुना, उसे बड़ा दुख हुआ। सबको हिरनी बहन से हमदर्दी थी। सबने कहा कि हो न

हो यह भेड़िये का काम है, तभी तो वह एक तरफ़ खड़ा हंस रहा है। सब जानवर चाहते थे कि भेड़िये को सज़ा दी जाए। मगर हिरनी बहन ने कहा, "मैं कुछ नहीं कहती, अल्लाह देखने वाला है। वह सब कुछ जानता है, मैं उसी पर भरोसा रखती हूँ।" यह बात सुनकर सब जानवर हिरनी बहन की प्रशंसा करने लगे।

दूसरे दिन इत्तिफ़ाक़ से शिकारी आ गये। उन्होंने जंगल में जाल लगा दिया। भाग्य की बात कि मियां भेड़िये जाल में फंस गये। बहुत उछले-कूदे, मगर न निकल सके और लाचार होकर गिर पड़े। जब शिकारियों ने उसे पकड़ लिया तब भेड़िये ने दिल-ही-दिल में कहा कि पाप सबको ले डूबता है। मैं पापी था, मैंने हिरनी के बच्चों को खाया था; इसका बदला अल्लाह ने हाथ-के-हाथ दे दिया।

काना उल्लू

बहुत दिन हुए एक पुराने बरगद के पेड़ पर एक उल्लू रहता था। वह अक्सर रात को अपना शिकार करने निकलता था। किसी तरह उसकी एक आंख ख़राब हो गई। यह बात सभी जानवर जानते थे। इसीलिए वे आमतौर से कानी आंख की ओर बसेरा लेते थे, ताकि उसके हमले से बचे रहें। इस प्रकार उल्लू अक्सर भूखा रहता और निराश होकर लौट आता।

एक दिन उसे एक तरकीब सूझी। उसने जंगल के पक्षियों को इकट्ठा किया और एक छोटा-सा भाषण दिया, और कहा कि अब मेरे बुढ़ापे का समय आ गया है, अल्लाह जाने कब मर जाऊं। इसलिए मैं अपनी पुरानी ज़िन्दगी से तौबा करता हूँ। तुम भी मेरी सब ग़ल्तियों को माफ़ कर दो और अपने दिल से डर निकाल दो।

बेचारे भोले-भाले जानवर उसकी बातों में आ गये। वे उल्लू राजा के पास निडरता से आने-जाने लगे और उल्लू राजा को घर बैठे भोजन मिलने लगा। वह अंधेरे-उजाले एक-आध जानवर पकड़ लेता और मजे से खाता था।

इस तरह प्रतिदिन की पकड़-धकड़ से जानवर कम होने लगे। आज चिड़िया रानी ग़ायब है, कल नीला-कबूतर अपने घोंसले में नहीं पहुंचा। सबने सोचा और आपस में सलाह की कि उल्लू राजा के दिल में तो कहीं खोट नहीं आ गया। अतः कौआ उड़कर उसके पास पहुंचा

और कानी आंख की ओट लेकर बैठ गया। थोड़ी ही देर में एक चिड़िया चूँ-चूँ करती वहां आई। उल्लू राजा ने झट गरदन उठाकर कहा, "चिड़िया रानी आओ, थोड़ी देर आराम करो। बड़ी दूर से आ रही हो, कुछ थकान दूर हो जाएगी।" चिड़िया उल्लू के पास आ गई। उल्लू राजा तो ताक में थे ही। उन्होंने उछलकर झपट्टा मारा, मगर चिड़िया फुर्ती से निकल गई और दूर जाकर उल्लू से बोली, "भइया उल्लू यह क्या बात है, तुम तो शिकार से तौबा कर चुके थे?"

उल्लू राजा से कुछ न बोला गया। वे बोलते भी क्या, 'कहीं झूठ के पैर होते हैं।' एक बार कोई झूठ बोल ले, मगर फिर उसका राज़ खुल जाता है। अल्लाह की ओर से झूठ की सज़ा मिलती है। अतः कौवे ने जंगल के सब जानवरों को उल्लू राजा की करतूत से सावधान कर दिया और शाम होते-होते सब जानवरों ने उसको नोंच-नोंच कर मौत के घाट उतार दिया।

कोशिश का फल

एक था तोता, एक थी मैना। दोनों एक ही पेड़ पर रहते थे। दोनों में बड़ी दोस्ती थी। जब देखो पास ही बैठे हैं। बातें हो रही हैं, मगर तोता कुछ दुखी रहता था। मैना अक्सर इस बात को महसूस करती थी और उसकी परेशानी का कारण पूछती थी। लेकिन तोता बात काट देता और कोई दूसरी बात छेड़ देता था।

अन्ततः मैना से न रहा गया। एक दिन उसने तोते से कुरेद कर पूछा "तोते भाई! हम लोग एक लम्बे समय से एक जगह रहते हैं। एक-दूसरे के दुख-दर्द में शामिल हैं, फिर क्या बात है, तुम मुझ से अपनी बेचैनी को छिपाते हो?"

तोता हंसा और बोला, "यह तुम्हारा भ्रम है, मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" मैना ने तोते की बात सुनकर कहा, "हाँ यह ठीक है। तुम्हें अल्लाह ने सब कुछ दे रखा है। यह ख़ूबसूरत शक्लोसूरत, ये बाग़ की बहारें, फल-फूल और ऐसा अच्छा मौसम। अपनी नींद उठते हो और अपनी नींद सोते हो। मगर फिर भी मैं देखती हूँ कि तुम किसी चिंता में डूबे रहते हो। आज मुझे अपना भेद ज़रूर बताओ, इससे तुम्हारे दिल का बोझ हलका होगा।"

तोते ने जब देखा कि मैना मानने वाली नहीं है, तो उसने कहा, "मैना बहन! आजकल दुनिया में बड़ी अफ़रा-तफ़री मची हुई है। बाग़ में जितने जानवर हैं, किसी को किसी से कोई हमदर्दी नहीं। तुमने

भी देखा होगा कि कौआ चिड़ियों के घोंसले में जाकर उनके अण्डे और बच्चे खा जाता है। चील और बाज़ के मुँह से भी ख़ून लगा हुआ है। हर ओर ज़ुल्म और अत्याचार हो रहा है। जो थोड़ी भी ताक़त रखता है, वह कमज़ोर पर सितम तोड़ रहा है। लालच, लोभ और स्वार्थ सबकी आदत बन गयी है। लड़ना-झगड़ना, एक-दूसरे को मार देना, मामूली-सी बात हो गयी है। मैं जब इन करतूतों की ओर देखता हूँ, तो दिल कांप जाता है।" तोते की ये बातें सुनकर मैना ने कहा, "तो यूँ कहो कि क़ाज़ी जी को शहर का ग़म खाये जा रहा है।" तोते ने कहा, "यह शहर का ग़म नहीं है। यह तो अपना ही ग़म है। जब ज़ुल्म और सितम अधिक बढ़ जायेगा, तो हम ख़ुद उससे कैसे बचेंगे। किसी घर में आग लग रही हो और हम आराम से निश्चिन्त अपने घर में बैठे रहें कि आग अभी दूर लग रही है, तो यह बुद्धिमान की पहचान नहीं है। उसका सही तरीक़ा तो यही है कि आग जहां भी लग रही है, वहीं उसको बुझाने दौड़ पड़ो, ताकि उसको आगे फैलने का मौक़ा ही न मिले, वरना यह ऐसी बुरी बला है कि पल भर में बस्ती की बस्तियां जलकर राख हो जाती हैं।"

मैना की समझ में भी बात आ गई। उसने तोते से कहा कि अब यह बताओ कि क्या किया जाए?

तोते ने उत्तर दिया, "अगर तुम मदद करो तो बहुत कुछ किया जा सकता है। हम मिल-जुलकर जानवरों के पास जाएँगे। उनको हर प्रकार से समझाएंगे। उनको ज़ुल्म और अत्याचार से तौबा करने और सीधी-राह पर चलने की नसीहत करेंगे। मैना बोली, "मैं अवश्य इस राह में तुम्हारी मदद करूंगी और पूरा साथ दूँगी। यह काम तो होना ही चाहिए। वास्तव में यदि बाग़ में अधिक बिगाड़ आ गया; तो फिर उसकी लपेट में सभी आ जाएंगे। गेहूँ के साथ घुन के

पिसने की कहावत तो मशहूर है ही।"

इस प्रकार दोनों ने खूब सोच-विचार के बाद पूरा साहस करके दावत का काम शुरू किया। सब जानवरों को सुख-शान्ति से रहने के लाभ और ज़ुल्म-ज़्यादती के नुक़सान बताए। अल्लाह ने उनके इस काम में बरकत दी और हर जानवर ने बुरे कामों से तौबा की। पूरे बाग का नक्शा बदल गया। हर ओर आपसी हमदर्दी पैदा हो गई।

लोमड़ी का साहस

सुबह का सुहाना समय था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। पूरब में सूरज धीरे-धीरे उभर रहा था। जंगल में दूर तक हरी-हरी घास का बिछौना बिछा हुआ था। रात भर के आराम के बाद एक ओर पक्षी अपने घोंसलों से निकलकर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर आ-जा रहे थे, तो दूसरी ओर हिरण, ख़रगोश और दूसरे जानवर उछल-कूद कर और बड़ी ही बेफ़िक्री से हरी घास चरते फिर रहे थे।

इसी बीच एक भोली-भाली लोमड़ी भी अपनी खोह से भोजन की तलाश में निकली। जंगल के मनोहर वातावरण को देखकर बड़ी ख़ुश थी। लेकिन अभी बेचारी अपने ठिकाने पर पहुंची भी न थी कि दूर से शिकारी-कुत्तों का एक झुण्ड आता दिखाई दिया। उन्हें देखकर लोमड़ी के होश उड़ गये। वह खाना-पानी भूल गई और उनसे बचने के लिए तेज़ी से सर पर पैर रखकर भागी। एक बड़े जंगली कुत्ते की नज़र उस पर पड़ी। वह भी उसके पीछे भागा।

जान सबको प्यारी होती है। लोमड़ी में जितनी शक्ति थी, वह उतनी तेज़ी से भागती रही, मगर कहाँ तक, कुत्ता, फिर कुत्ता था और वह भी शिकारी क़िस्म का। धीरे-धीरे दोनों के बीच की दूरी कम होती गई। उधर लोमड़ी का सांस फूल चुका था। उसकी टांगें भी जवाब दे रहीं थीं। वह बड़ी मुसीबत और संकोच में थी। कोई झाड़ी, या कोई छिपने की जगह आसपास दिखाई नहीं दे रही थी। अब वह करे तो क्या करे, इस ख़तरनाक जानवर से कैसे जान बचाए।

ऐसे समय में ख़ुदा ही याद आता है। फिर वही कमज़ोरों और बेकसों का सहारा है। लोमड़ी ने भी ख़ुदा को याद किया। इससे उसको बड़ी हिम्मत मिली। उसने सोचा ख़ुदा सबका मालिक है, मौत और ज़िन्दगी उसी के हाथ में है, आएगी अपने वक़्त पर।

अगर ख़ुदा मारना चाहता है, तो कोइ बचा नहीं सकता और अगर जिलाना चाहे तो कोई बाल बांका भी नहीं कर सकता। फिर मेरे लिए चिन्ता की क्या बात है, मुझे उसी पर भरोसा करना चाहिए और साहस से काम लेना चाहिए। अगर ख़ुदा को मुझे जीवन देना है, तो फिर यह एक कुत्ता क्या? अगर सारे कुत्ते भी आ जाएं तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

यह सोचकर वह भागते-भागते रुक गई और कुत्ते का इंतज़ार करने लगी। कुत्ता बड़ी तेज़ी से भागा आ रहा था। लोमड़ी अल्लाह के भरोसे पर अपनी जगह पर बिल्कुल निडर जमी खड़ी थी। उसने कुत्ते का सामना करने के लिए तरकीब सोच ली थी।

अतः जैसे ही कुत्ता उसके पास तक पहुंचा। लोमड़ी ने आव देखा न ताव बस अपने खुर उसकी आंखों में दे दिये। कुत्ता इस अचानक हमले के लिए तैयार न था। खुर की चोट लगते ही उसकी दोनों आंखें फूट गईं। वह अन्धा हो गया और लोमड़ी की जान बच गई। उसने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और जंगल में भाग गई।